★ काश्मीर के प्रति

शारदी मठ मारभ्य कुंकुमादितटांतकः ।
तावत्कश्मीर देशः स्यात् पंचाशद्योजनात्मकः ॥



डा. शंकरलाल चतुर्वेदी

★

शुभ-सम्मति

काश्मीर भारत का शाश्वत-काल से एक अभिन्न अंग रहा है। उसकी प्राकृतिक छवि जन-मानस विमुग्धकारी है। इससे सम्बन्धित अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं जो उसके प्राकृतिक-सौन्दर्य, राजनैतिक-इतिहास एवं युद्ध-वर्णन पर पृथक-पृथक रूप से प्रकाश डालती हैं किन्तु प्रस्तुत काव्य—"काश्मीर के प्रति" में कवि ने अपनी प्रखर एवं भावुक बुद्धि से उक्त तीनों तथ्यों का समन्वय काव्यात्मक भाषा में किया है।

काव्य में मधुर, सरल एवं सुबोध-भाषा का प्रयोग किया गया है जिससे एक ओर काव्य प्रवाह बना रहता है और दूसरी ओर वह जनता को हृदयंगम कराने में सहायता देती है। प्रस्तुत काव्य की विशेषता यह भी है कि लघु-कलेवर में ही काश्मीर के सौन्दर्य एवं गौरव के साथ उसके भारत-विलय एवं तदर्थ भारत-पाक-युद्ध का स्वाभाविक चित्रण किया गया है जो काव्य रसिकों को जहाँ आनन्द-प्रद है वहाँ साधारण जनता को वीरत्व, देश प्रेम एवं उत्साह की प्रेरणा देता है।

मेरे विचार से कविवर डा० शंकरलाल चतुर्वेदी एम० ए०, पी० एच० डी० का यह कार्य इसलिये और भी स्तुत्य है कि उन्होने राजकीय अध्यापन कार्य में व्यस्त रहते हुए भी इस प्रकार का काव्य सृजन किया। मैं कवि के इस प्रयास पर उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ और शुभ कामना प्रकट करता हूँ। मेरा विश्वास है कि प्रत्येक-देश-प्रेमी एवं शिक्षा-संस्थान इसे ग्रहण कर कवि को प्रोत्साहन प्रदान करेगा।

अध्यक्ष–वायुसेना एवं केन्द्रीय-विद्यालय,
फरीदाबाद।
रामनवमी सम्वत् २०२६

शुभ-चिन्तक
उमेश चन्द्र
विंग-कमाण्डर

काश्मीर के प्रति

शारदा मठ मारभ्य कुंकुमादितटांतकः ।
तावत्कश्मीरदेशः स्यात् पंचाशद्योजनात्मकः ॥

★

★

डा० शंकरलाल चतुर्वेदी

प्रकाशक :
गोपाल साहित्य सदन,
विश्राम घाट,
मथुरा

★

प्रथम-संस्करण
एक हजार—१९७२

★

मूल्य : ~~एक रुपया पच्चीस पैसे~~
Rs 1.50
१॥)

★

मुद्रक :
हेमेन्द्रकुमार
साधन प्रेस,
डैम्पियर नगर, मथुरा।

आत्म-निवेदन

काश्मीर का नाम तो सर्वविदित है । उसका महत्त्व अपने में सुरक्षित है । यही वह भूमि है जहाँ मानव का प्रथम पदार्पण हुआ एवं सृष्टि-की शृङ्खला आगे बढ़ी । इसका उल्लेख वैदिक-ग्रन्थ, पुराण-साहित्य सभी ग्रन्थों में पाया जाता है यद्यपि काश्मीर के सम्बन्ध में मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में बहुत-कुछ सुना तथापि सन् १९६५ ई के भारत-पाक-युद्ध काल में इसकी ओर अभिरुचि विशेष हुई । उसी समय कवि-सुलभ-प्रकृति के कारण मैंने कुछ छन्दों की रचना की, मेरे स्मृति-पटल पर 'काश्मीर' नामक-चलचित्र की कथा शनै-शनै अंकित होने लगी । मैंने जिज्ञासा के रूप में काश्मीर से सम्बन्धित साहित्य पढ़ा और उस ज्ञान को काव्य रूप में निबद्ध करता रहा ।

सन् ७२ के दिसम्बर में जब संगर के रूप में पाक-देश ने आक्रमण किया तो बंगला देश की राज्यक्रान्ति एवं अत्याचार मेरे हृदय को द्रवित कर उठा और देश-भक्ति एवं मानवता की भावना से कुछ पंक्तियाँ लिख डालीं । इसी समय मेरे हृदय में कवित्व-भावना सक्रिय हुई और सभी काव्यांशों को जोड़कर-'काश्मीर

के प्रति)—एक खण्ड काव्य के रूप में निबद्ध किया। इस काव्य में पांच सर्गों में काश्मीर के सम्बन्ध में अपनी भावना व्यक्त की गई है। जिसमें प्रथमादि सर्गों में काश्मीर-गौरव, १९४८-४९ का पाक-युद्ध, १९६५ का भारत-पाक रण, बंगला देश का अनाचार एवं सन् ७१ का पाक आक्रमण एवं भारत विजय का उल्लेख किया गया है।

इस काव्य को जनता के समक्ष प्रस्तुत करने की इच्छा बलवती हुई इस सम्बन्ध में मैंने आदरणीय विंग कमाण्डर श्री यू० चन्द्रा महोदय एवं काश्मीर निवासी ठा० श्री करणदेव सिंह जी से परामर्श किया जिन्होंने मेरे विचार को उचित बतलाते हुए मुझे यथा सम्भव प्रोत्साहन एवं सहयोग प्रदान किया अतः उनके प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ साथ ही विद्वत-वियत्-विधु डा० आर० एन० सफाया को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने मुझे तदर्थ आज्ञापित कर मेरे मार्ग को प्रसस्त किया। होशियारपुर निवासी श्रीगुरु दासजी ठेकेदार एवं 'गोपाल साहित्य सदन' को भी मैं भुला नहीं सकता जिनके सहयोग से इस काव्य का प्रकाशन सम्भव हुआ। अन्त में विद्वदर श्री आर० के० चड्ढा महोदय को धन्यवाद देते हुए पाठक-वृन्द से निवेदन करता हूँ कि यदि किसी कारण वश कोई त्रुटि रह गई हो तो क्षमा करेंगे और अधिकाधिक इसे अपना कर मुझे प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

तिथि—अधिक वैशाख प्रतिपद सम्वत् २०२९ वि० विनीत-

४६८ महोली की पौर मथुरा। शंकरलाल चतुर्वेदी

काश्मीर-निवासी

(ठाकुर श्री करण-देवसिंह)



रोमाल-हृदय-हृद-कमल से, काश्मीर-अवतंस ।
सौम्य-मधुर-मृदु-प्रकृतिमय, निर्मल-मन ज्यों हंस ।।
करन-देवसिंह करन से, याचक-जन-प्रतिपाल ।
श्रीयुत जन-सेवी सतत, कविता-प्रिय ज्यों 'बाल' ।।

मङ्गलाचरण



पावौं मैं सम्पति सुभग, सुन सर्वज्ञ सुजान ।
नित-नित नूतन नय मिलैं एक दन्त द्युतिमान ॥
एक दन्तद्युतिमान, मान, धन-विद्या-शाला ।
कर-कुठार कलकंज शत्रु अध-काल कराला ॥
'शंकर' शुभ पद वन्दि माथ प्रभु ताहि मनावौं ।
लम्बोदर हेरम्ब चपरि मैं निधि-सिधि पावौं ॥

※ श्री गणेशाय नमः ※

काश्मीर के प्रति

प्रथम - सर्ग

ओ हिन्द-वीर के उच्च-भाल,
किन्नरियों के पावन, सुदेश ।
तेरी महिमा का अमित-गान,
कर सकते क्या सारद गणेश ॥१॥

सौन्दर्य-सलिल-सर-वर है तू,
नर-नलिन जहाँ सर्वत्र खिले ।
मधुकरी-किन्नरी वार चुकीं,
मधु-रस-लेकर मन-मुक्त भले ॥२॥

पर्वत - पयस्विनी - पादप-गण,
पुष्पावलि - पावन - विविध - रंग ।
आभूषित-कलित-मृदुल-मधु-मय,
प्रकृति-वनिता के विविध रंग ॥३॥

केसर-कल-कंज-विहारिणि हो.
वर-प्रकृति-पद्मिनी-वाम वनी ।
नर की क्या गणना है जिस पर,
मोहित होते सुर, यक्ष, मुनी ॥४॥

तेरी कल-कंज-कली, केसर,
बादाम दाम सी फुलवारी ।
फल, फुल्ल-फूल, मधुमय-मेवा,
निर्झर-प्रपात, हिम-मय वारी ।।५।।

भारत-माता का तू ललाट,
पृथ्वी का नन्दन सा कानन ।
अथवा तू भारत-भामिनी का,
मंजुल-मयंक सा है आनन ।।६।।

कुछ तीव्र, त्वरित गति से बहती,
इठलाती सी इतरारी सी ।
नव-वधू-वितस्ता तव हिय-पर,
कल-कलिका सी कल पाती सी ।।७।।

उसमें कंजादिक विविध पुष्प,
मानो बहु-दीप सुहाते हैं ।
अपने प्रियतम की आरति को,
आरत-हर वारे जाते हैं ।।८।।

तरनी तटनी-शीतल-जल में,
जब खोल पाल को बहती हैं ।
मानों अलका-नगरी-नभ में,
पर-खोल परी बहु उड़ती हैं ।।९।।

त्वरिता-गति से वे आ-जा-कर,
इतराना अमित दिखाती हैं ।
लहरों से लह कर सलिल-घात,
अनुपम-नव-नृत्य दिखाती हैं ।।१०।।

नव-वधू सपति उनमें मानों,
यक्षिणी यक्ष संग सजी हुई ।
अथवा सुर-ललना नाथ-साथ,
सुर-सरिता में रति भरी हुई ॥११॥

ओ काश्मीर ! जब चन्द्र पूर्ण,
जल व्यास मध्य दिखलाता है ।
मानो बहु चन्द्र-मुखी लख कर,
होकर विमुग्ध रम जाता है ॥१२॥

अथवा देकर निज सुधा-दान,
निज व्यक्त भावना करता है ।
रति-पति का सहचर बनकर,
मोहक आसव से भरता है ॥१३॥

अथवा बहु-रूप धार जल में,
चाँदी-चकई सा लगता है,
उत्तुङ्ग-तरङ्ग-तरङ्गित हो,
कर-कस की कसरत करता है ॥१४॥

तू आर्य-भूमि, तू दिव्य-देश,
तू वैदिक प्रतीक तू किन्नरेश ।
तू आदि सभ्यता का निधि-वन,
शुभ-सुन्दर-सारस्वत प्रदेश ॥१५॥

गिरिजा-पति किन्नर नृत्य हेरि,
स्तब्ध हुए ज्यों पाथ-नाथ ।
नभ-चुम्बित गढ़ सा अद्रि-मृङ्ग,
हो गया प्राप्त करके सनाथ ॥१६॥

मधु-मृदुल-मनोहर-दिव्य-दृश्य,
दृष्टिगत होता उच्च धाम ।
हिम-गिरि का मानस-मान-ताल,
हर-गृह ललाम कैलाश-नाम ॥१७॥

श्री नगर पार्श्व उत्तर दिशि में,
मङ्गल-मय पावन अमर नाथ ।
जिसकी यात्रा अघ-ओघ हरै,
मन मुदित होत गिरि-सुता-नाथ ॥१८॥

जिसको आराधा वार-वार,
वारण-तारक ने स-विधि-साध ।
वैष्णव-देवी की दिव्य-दरी,
भक्ति सी धारा है अगाध ॥१९॥

तुझसे वह ब्राह्मण-विज्ञ हुआ,
जिससे थर्राता दिग-दिगन्त ।
ओ काश्मीर ! कारण, जिसके,
अवतीर्ण हुए रघवर-अनन्त ॥२०॥

भारत-माता का तू ललाट,
साहित्य,शास्त्र का सौख्य-सिन्धु ।
लह लही हुई है विश्व-वेलि,
जिसकी लघु सी पा एक विन्दु ॥२१॥

जिसका पाण्डित्य प्रभाकर सा,
खर-प्रभा दिगन्त दिखाता था ।
विद्वता बनारस मागध की,
हारी, मुख बंग छिपाता था ॥२२॥

चाणक्य-चतुर नृप-नीति-विज्ञ,
व्याकरण-करण शालातुरीय ।
उत्पन्न हुए जिन जननी से,
उनका तू प्रांगण दर्शनीय ।।२३।।

है विश्व-विदित तव बौद्ध-धर्म,
ललितादित का साहस अपार ।
नत मस्तक था यह चीन-देश,
जिसके बल सम्मुख बना सियार ।।२४।।

जिसके भय से थे भीत सभी,
तिब्बत सिक्किम और देश चीन ।
शक्ति-शान्ति का आराधक,
प्यारा कनिष्क तव-सरित-मीन ।।२५।।

पान द्वय से आहृत होता,
वेदान्त-काव्य का मिलन-दिव्य ।
उस प्रतिभा का विजयी मम्मट,
हे काश्मीर ! तव निधि भव्य ।।२६।।

अकबर महान के कारण तू !
मुगलों का भव्योद्यान बना ।
जहाँगीर-पुत्र, मुमताज-ताज,
का क्रीड़ाराम ललाम बना ।।२७।।

लालाट-देश ! औ ललन-धाम,
लालिमा-ललामी युक्त देश ।
तेरा लावण्य विलोकन को,
आते अशेष नित भव्य-देश ।।२८।।

आँग्ल-देश के अवला-गण,
तुझको निहार थक जाते थे ।
जगती-तल का आश्चर्य नवल,
पाश्चात्य पुरुष बतलाते थे ।।२६।।

क्रीडास्थल अभिराम बना,
गौराङ्ग देव की ललना का ।
काश्मीर ! कलित-कलता तेरी,
भोली कामिन की छलना का ।।३०।।

तेरी प्रभुता, महिमा, गरिमा,
नन्दिन-वन-कलित कामना से ।
हो देश-प्रेम से ओत-प्रोत,
जिसने कैंकर्य-भावना से ।।३१।।

दे लाख-पिचहत्तर-मुद्रा के,
गोराङ्ग प्रभु को मन चाही ।
तेरे तन से बेड़ी कठोर,
दासता-मयी यों कटवाही ।।३२।।

क्षत्रिय-कुल-कमल-दिवाकर सा,
वह काश्मीर ! था सिंह गुलाव ।
भुज विक्रम अद्रि-सुता-सुत सा,
जननी-अवनि प्रति नेह भाव ।।३३।।

रिपु-गर्व-रदन के भंजन को,
तन-मन में साहस था अपार ।
तिब्बत गिलकिट तक रेख-खींच,
पहुँचाई सीमा चीन-पार ।।३४।।

सुषमा भर दी तेरे तन में,
जनता को दिया था दुलार।
उन्नत हो प्राज्ञ, प्रभा विकसे,
कविता-कामिनि से अतुल प्यार ।।३५।।

हो गया स्वतन्त्र उन्नत मस्तक,
हे भारत-भू-आनन-अनूप।
सदियों से मानो आप्त किया,
तू ने अपना अनुपम स्वरूप ।।३६।।

था गुलाव-सिंह-हृद का गुलाव,
कविता-प्रिय पण्डित काश्मीर।
जन-प्रिय-शासक सा भूप बना,
शार्दूल सरिस 'रणवीर' धीर ।।३७।।

कर दिये पूर्ण सब पितृ-कार्य,
हो गया उऋण यों काश्मीर।
सीमा को सुदृढ़ बना डाला,
रणवीरसिंह था सिंह वीर ।।३८।।

याचक थे पूर्ण अयाचक से,
पाण्डित्य-प्रेम था मन-उदार।
रणवीर-सिंह-सुत जब 'प्रताप',
बन भूप तुझे किया पियार ।।३९।।

तव आंग्ल फ्रेन्च, डच, रोम-नारि,
जर्मनी, अरब तरुणी-ललाम।
तव छवि निरावने आतीं थीं,
लज्जित होतीं तुझ से प्रकाम ।।४०।।

मुगलों की भामिनी चपला सी,
चञ्चला चारु-चीनी-कुमारि।
रूसी, जापानी रद-तृण ले,
तव ललना ढिग करतीं पुकार ॥४१॥

उनके भाई थे अमर सिंह,
शुचि,सौम्य,सरल,चित से उदार
निः सन्तनि अपने अग्रज से,
कैकेयि-सुत सा करते पियार ॥४२

दे दिया पुत्र निज हरीसिंह,
उनकी सेवा आराधन में।
पाया था जिसने प्रेम-भाव,
पितृव्य-प्रताप-सिंह-मन में ॥४३॥

जिन्ना-कुचाल का भंजन कर,
मन-रंजन जनता का करने।
भारत को सोंपा, काश्मीर !
तजि तुझे देश का हित करने ॥४४॥

मग-तरु-गृह सा निज राज्य त्याग,
बम्बई में कीन्हा सुखद वास।
आजीवन प्रण को पूर्ण किया,
फैली जिससे यश की सुवास ॥४५॥

उन हरीसिंह-सर के पंकज,
हैं काश्मीर - गौरव - अनूप।
उप-राज्य पाल जन-पालक थे,
दानी हैं जैसे कर्ण-भूप ॥४६॥

हैं कर्ण सिंह राजा तेरे,
भारत के मन्त्री अति उदार।
गो-द्विज-याचक-पण्डित-कवि वो,
विष्णु सा देते अतुल प्यार ॥४७॥

नेहरू जा के विश्वास-पात्र,
त्यागी, न्यायी पण्डित सुजान।
गर्वित हो पाकर काश्मीर!
इन वल रत्न का शुभ्रखान ॥४८॥

तेरा वैभव ओ ललाट थान,
तेरी कलता काश्मीर देश।
पाने को अपहृत करने को,
दृष्टि डालें हैं विविध देश ॥५०॥

तू अब भी आलस में सोया,
गाता अनुराग भरा विहाग।
दुश्मन छाती पर खड़ा हुआ,
तू जाग-जाग यह राग त्याग ॥५१॥



द्वितीय-सर्ग

जननी जन्म-भूमि तो
होती है दिव से भी बढ़कर ।
उससे जो प्रेम नहीं करता,
वह हृदय नहीं, समझो पत्थर ॥१॥

वह पराधीन होकर भय से,
दुख-जनित अश्रु-गण-स्रवती हो।
नित-दुष्ट-विदेशी-पद-लुण्ठित
रह-रह कर आहें भरती हो ॥२॥

निज संस्कृति, भाषा, भाव, अर्थ
होते विलुप्त वह लखती हो ।
भय खाकर अत्याचार सहे,
वलि-पशु सी पशुता सहती हो ॥३॥

सुख भोगे पुत्र रँगा अरि-रँग,
निज संस्कृति-भाषा को खोता ।
वह पुत्र नहीं नालायक है,
सँवर-कण्टक-कृषि को बोता ॥४॥

ऐसी माँ से वन्ध्या अच्छी,
निःपुत्र समझ होती प्रसन्न ।
निज-पति से करुण-याचना कर,
हो मुक्त सद्य होती प्रसन्न ॥५॥

जिनकी माता-पर-नर-वश हो,
जिनकी भूमि पर-हस्त-गता।
वे भार सदृश इस पृथ्वी पर,
जीवित ही है वे निहता ॥६॥

गाँधी गुरु तिलक गोखले ने
यह सोच सुदृढ़ संग्राम रचा।
भारत हा-रत हो गया निरत
पूरब पश्चिम कुहराम मचा ॥७॥

मोती के लाल जबाहर ने
जो तेरी निधि का नवल रत्न।
भारत-माँ-बंधन-भंजन का
तन-मन-धन से कर दिया यत्न ॥८॥

पन्द्रह अगस्त सैंतालीस में,
भारत प्रखण्ड दो खण्ड बने।
ना पाक पाक जिन्ना खातिर,
पूरब-पश्चिम के खण्ड बने ॥९॥

हर्षाम्बुधि उमड़ चला जन में,
भारत-नर-नारी लीन हुईं।
इन वर्ष-हर्ष हिल्लोरों में,
सब प्रजा मनौ वर मीन हुईं ॥१०॥

मोती-सुत आप्त सफलता से,
मार्त्तण्ड सदृश यह देश हुआ।
गीता-पथ से उद्देश्य-लब्ध,
गान्धी ने संगर बन्द किया ॥११॥

पर विधिना की विधि क्या होती,
इसका रहस्य कब प्रकट हुआ ।
दुःख में सुख की खेती होती,
सुख में दुःख वारिधि-विकट हुआ ।।१२।।

अक्टूबर के उत्तरार्द्ध-अन्त,
अन्तक सा जिन्ना जालिम हो ।
तेरे वसन्त-वर-वर्णों पर,
भीषम ग्रीषम सा कायम हो ।।१३।।

गौराङ्ग-प्रभु प्रभुता पाकर,
की सन्धि कबालियों से कराल ।
तेरा वक्षस्थल रोंदित हो,
रे काश्मीर ! की कपट चाल ।।१४।।

तू तब भी सुख की निद्रा में,
स्वप्निल था अथवा सुप्त पड़ा ।
अपनी ही विकट समस्या में,
हे काश्मीर ! तू लुप्त-पड़ा ।।१५।।

नृप हरीसिंह जाग्रत स्वामी,
मेहर सँग निपट भयातुर थे ।
वे आन-बान-आरूढ़-वीर,
नृप-नीति-विज्ञ समरातुर थे ।।१६।।

जिन्ना ने भेजा एक दूत,
मेहरचन्द से वह बोला ।
"तुम सर्व श्रेष्ठ मन्त्री-वर हो,
यह हमने निज-चित में तोला ।।१७।।

"दो परामर्थ यह वर्ष-शीश,
हर्षित हो, मेरा मित्र बने।
नाके बन्दी का अन्त सद्य,
काफिर ही फिर से शत्रु बने" ॥१८॥

गाँधी हिंसा से डरता है,
व्रण सा हिय में पीड़ित होता।
उसके वचनों पर पण्डित है,
रण हेरि श्याम-शोणित होता ॥१९॥

राजेन्द्र शान्ति की प्रतिमा है,
राधाकृष्णन् आध्यात्म दूत।
काफिर कुरान का मौलाना,
गाँधी का चेला पंत-पूत ॥२०॥

वे हैं गुलाम अति भीरू प्रकृति,
दासता सदैव सुहाती है।
भारत की राज्य श्री देखो,
चुटकी में पदतल आती है ॥२१॥

मेहर ! तब हस्तामलक सिंह,
तुम भारत के भावी स्वामी।
यह मुग्ध-हिन्दु-जनता-भीरू,
अति सद्य बनेगी अनुगामी ॥२२॥

चुप हुआ चपरि चर यह कहकर,
मेहर मन्त्री का यह उत्तर।
मैं परवश हूँ, मम-वश बाहर,
हर-हरी सदृश नाहीं उत्तर ॥२३॥

हरीसिंह सत्य स्वामी मेरे,
सच्चे हिन्दू भारतीय वीर।
भारत का प्रेम रमा जिनके,
रग-रग में रंजित, हो सुचीर ॥२४॥

तेरी चालों में फँसे वीर,
मुझको नितराम् इसमें सन्देह।
पाकेश-अली से सन्धि करें,
धारण कर हिन्दू की सुदेह ॥२५॥

अतएव पाक-स्वामी से कह,
ना पाक भावनाएं तेरी।
मेहर-कमरी के रञ्जन में,
निष्फल सी हेरी अनहेरी ॥२६॥

यह तेरी कुटिल-कूट-नीति,
कण्टक सी पटतल रुदित हुई।
मनचाही तेरी हो जावै,
यह असम्भावना सी इति हुई ॥२७॥

जा, चला भाग जा संदेश हार,
जिन्ना से कह दे, यवन-दूत।
अस्वीकृत तेरी कूट नीति,
हम भारतीय हैं शक्ति-पूत ॥२८॥

चर लौट गया रावल पिण्डी,
फोरन अपना सा मुँह लेकर।
जिन्ना जनाव भौचक्के से,
रह गये यथा मुँह की खाकर ॥२९॥

मन्त्री ने सोचा पाक-नाथ,
अब कपट-कुचक्र चलावेगा।
नीति अनरीति कर अनीति,
हम पर हर जुल्म ढहावेगा ॥३०॥

हरीसिंह प्रभु से हाल कहा,
विनिमय विचार हो गया तुरन्त।
हे काश्मीर! तेरे जन का,
हो जावे संकट-सद्य अन्त ॥३१॥

रातों ही रातों पवन-पंथ,
भारत की रजधानी पहुँचा।
पाण्डव की पावन नगरी में,
मेहर-मन्त्री जाकर पहुँचा ॥३२॥

सरदार पटेल, जवाहर से,
मन्त्रणा गुप्त की मिलि तुरन्त।
काश्मीर सन्धि स्वीकार हुई,
टल जाय कष्ट-धन ज्यों तुरन्त ॥३३॥

दोनों देशों में प्रेम हुआ,
बंध गये वचन-गुण में दोनों।
निश्चिन्त हुए मेहर-मन्त्री,
भारत-तन्त्री इससे दोनों ॥३४॥

अक्टूबर की छब्बीस दिनांक,
तेरा भारत में विलय हुआ।
जिन्ना का, जिससे काश्मीर,
पवि हृदय टूटकर खण्ड हुआ ॥३५॥

काली-निशि नीरव अमा ख्यात,
राका उजियारी के ऊपर।
काली-काली घन-घोर घटा,
छायी-आभा-मय-नभ-ऊपर ॥३६॥

'ओ अल्ला ओ अकबर अल्ला'
था तुमुल-घोष भू अम्बर पर।
वह्नि-विस्फोटक यन्त्र युक्त,
यवनों का दल था तव-उर पर ॥३७॥

गृह-भवन,महल-मन्दिर,मसजिद,
हो गये प्रकम्पित एक बार।
घुस गये दस्यु-दल दानव से,
करने को तुझ पर अनाचार ॥३८॥

हे काश्मीर। कल-कंज-मुखी,
कलिका सी कोमल कामिनियाँ।
किन्नरी नरी भ्रमरी सी सब,
दामिनि सी घन में भामिनियाँ ॥३९॥

उनका सौन्दर्य सुहाग-भाग,
उन दस्यु-दुष्ट ने लेने को।
कर दिया नृत्य बर्बरता का,
सर्वत्र खर्व-धन लेने को ॥४०॥

अपहृत कर डाला सर्वस्व सत्व,
निर्मूल्य-निर्माल्य बना डाला।
तेरे ही सम्मख काश्मीर!
तव-नलिनी पर पाला डाला ॥४१॥

कर दिये बन्द, बन्धन-मय-कर,
अर्गला अयस दे, वज्रघात।
दानवता के सम्मुख सब जन,
पीपल-पत्रों से थे निपात ॥४२॥

हाथों में गाढ़ी गईं कील,
नख दन्तों को तोड़ा-ताड़ा।
भय-विह्वल सभी प्रकम्पित थे,
मानो समीर विन था जाड़ा ॥४३॥

कमरों डाले थूल रज्जु,
था अयस-अर्गला-बंध कहीं,
था कशाघात या कराघात,
अथवा असि का संघात कहीं ॥४४॥

था उभय- श्री अपहृत करना,
यवनों के हिय में लक्ष्य बना।
मृदु-मधुर मानवों को डसने,
दस्यु भुजङ्ग प्रत्यक्ष बना ॥४५॥

था चीत्कार अवला-शिशु का,
कष्टों से प्रेरित्त थी कराह।
कामिनि गण का करुणा-क्रन्दन,
थी व्याप्त सकल दिशि त्राहि-त्राह ॥४६॥

नवल-वधूटिन के सिंदूर,
से भरे जा रहे वे झोली।
उष्ण-रक्त की धारों से,
खेल रहे थे वे होली ॥४७॥

पति की आँखों के आगे,
जब लूटा जाता सत-सतीत्व ।
तव दानवता भौंचक्की सी,
खो बैठी नरता निजास्तत्व ।।४८।।

हिल उठा हिमालय-अचल पुष्ट,
मचगई सिन्धु में तब हल चल ।
इन्द्रासन - रुद्रासन - कम्पित,
खो बैठा भारत-भी निज कल ।।४९।।

तिरछे तेवर नेहरू, पटेल के,
रद-पुट रदन मध्य तब आये ।
वक्र भ्रकुटि, आयत नेत्रों में,
डोरे लाल रोष के छाये ।।५०।।

यवन भुजंग निगलने को,
करिअप्पा-खगपति को भेजा ।
जिसने काश्मीर तेरे ढिंग,
सैन्य तन्त्र को सहज सहेजा ।।५१।।

लगीं उगलने आग तोप तब,
हथ गोले औ छूटे बम्ब ।
लगे - भागने मुगल - लुटेरे,
छम्म हुई हत्या तब छम्ब ।।५२।।

सिर कहीं, कहीं पर हाथ पड़ा,
पग कहीं कहीं धड़ टूट गिरा ।
आँतों के साथ उदर फटकर,
खरबूजा सा अरि-मुण्ड गिरा ।।५३।।

जिन्ना के निर्दय हत्यारे,
उठे भाग ज्यों भागें स्यार।
मत्त मत्तङ्गज, क्षुधित बाघ से,
सरदारों ने दी जब अति मार ॥५४॥

तटनी तवी, सिन्धु नद निर्झर,
जम्बू के दृढ़-दुर्ग धाम को।
अधिकृत किया करीअप्पा ने,
छम्ब काडगिल थल ललाम को ॥५५॥

अपने परम पराक्रम द्वारा,
नष्ट भ्रष्ट कर यवन-व्यूह को।
बचालिये आबाल बृद्ध के,
प्राण प्रतिष्ठा तिय समूह के ॥५६॥

मोह-मयी माता की गोदी,
नव-ललना की मंगल-माँग।
नारी-शील, प्राण बच्चों के,
बचे सभी धन धर्म सभाग ॥५७॥

तीन चौथाई क्षेत्र मुक्त कर,
शान्ति सौख्य निर्भयता देकर।
नेहरू के आदेश-विवेश हो,
रुका तभी दल चकिचित होकर ॥५८॥

हे काश्मीर ! हे व्यास-देश !
तेरे संकट का हुआ अन्त।
मानो पतझड़ हिम ऋतु पीछे,
छागया निखिल ऋतुवर बसन्त ॥५९॥

धीरे-धीरे जो ध्वस्त प्रान्त,
निर्माण हुए फिर से प्रकाम।
भारत की इन्दिरा को मन से,
दी लाल जबाहर ने अकाम ।।६०।।

तेरे कपूत इक बेटे ने,
फिर शत्रु का दिया साथ।
तुझको वंचित कर काश्मीर।
इच्छा थी उसका बनूं नाथ ।।६१।।

नेहरू का प्यारा कृपा पात्र,
थी बाग-डोर उसके कर में।
भड़काता रहता जनता को,
ज्यो मगर मच्छ वस कर सर में ।।६२।।

उस कलह-वाद से काशमीर,
तू क्षुब्ध हुआ फैला विषाद।
वलिदान हुए भारत-सपूत,
जा-जाकर---श्यामा प्रसाद ।।६३।।

जो नारी पति से कपट करे,
संकट में साथ अनख छोड़े।
सुख भोगे यौवन, सम्पति में,
दारिद्र जरा में मुख मोड़े ।।६४।।

जो मित्र मित्र से घात करे,
आपद में करता परित्याग।
स्वार्थों के वशीभूत होकर,
शत्रु से करता सन्धि, राग ।।६५।।

सेवक मिथ्या-हित-वच कहकर,
करता रहता विश्वास घात।
जनता को लेकर स्वयं डूबे,
स्वामी को लाता विपति-रात ।।६६।।

जो जननी जन्म भूमि पर,
संकट बादल है लाता ।
वह पुत्र नहीं प्रच्छन्न-शत्रु,
अपनी करनी के फल पाता ।।६७।।

अतएव कर्ण-प्रिय काश्मीर,
कर दिया शेख को नजर बन्द ।
जिन्ना का 'परिषद्' रसिया ने,
'वीटो' से मुख किया बन्द ।।६८।।

तुझको हथियाने पाकेश-प्रभु,
षड़यन्त्र रचा वे करते थे ।
पन्द्रह अब्दों में छुट-पुट सी,
दुर्घटना करते रहते थे ।।६९।।

जिन्ना, मिर्जा गत अयूब आये,
परिषद् में जा-जाकर भड़के ।
नेहरु के जाते ही शत्रु,
विन बादल तड़ित सहश तड़के ।।७०।।

आलस में सोया काश्मीर।
गाता अनुराग भरा विहाग।
दुश्मन छाती पर खड़ा हुआ,
तू जाग, जाग यह राग त्याग ।।७१।।

———

तृतीय सर्ग

नेहरू के जाते भारत में,
लाल बहादुर जी आये ।
दृढ़-निश्चय सत्य सादगी को,
भारत-सनेह सह फैलाये ।।१।।

तू चिन्त-हीन रोगी जैसा,
अथवा अतीत का मनन शील ।
अपनी उलझन सुलझाने में,
वन्धुत्व विश्व लहि यत्न शील ।।२।।

पर-अरि दल-बल से जगा हुआ,
तेरे उत्तर में काश्मीर ।
कर कपट, कुचाल चलाने में,
षड़यन्त्र रचा होकर अधीर ।।३।।

सोचा इस्लाम धर्म-खातिर,
जम्बू के सच्चे मुसलमान ।
विद्रोह करेंगे हिल मिल कर,
जय प्राप्त करेगा पाक-थान ।।४।।

तव कलित कली की सुन्दरता,
कोमलता लता समान सभी ।
कंचन कामिनि कर्ण-वाला,
कर गत होंगी वे वेगि अभी ।।५।।

कचनार-कली, रसभरी सरस,
सन्तरा,अनार मधु मय रसाल।
उनका रस लेने काश्मीर,
दुश्मन का वेहाल हाल ॥६॥

पर भावी विधि के वशीभूत,
उस पर न किसी की चलती है।
ना पाक पाक की छलना सब,
उस चतुरानन को खलती है ॥७॥

काले कबालियों की छुट-पुट,
घुस-पैंठ अगस्त पाँच से थी।
प्रेरक पाकस्तानी सेना,
खिलबाड़ हिन्द आँच से थी ॥८॥

धीरे-धीरे बढ़कर वे ही,
इक अनी स्वरूप सितम्बर को।
तेरी पृथ्वी को, काश्मीर,
ढक दिया तुम्हारे अम्बर को ॥९॥

बादल-दल सा तब उमड़ि, घुमड़ि,
मुस्लिम समुदाय भयावन था।
गोली-गोला झड़ वृष्टि-सरिस,
पर भारत-सैन्य पवन-घन था॥१०॥

दिशि-विदिशि ओर से घिर-घिरकर,
दानव अयूब चढ़ते आते।
भारत-झंझा के वेगों से,
वे तितर-बितर होते जाते ॥११॥

होगया प्रकम्पित गिरि कानन,
शिव-शंकर-आसन डोल उठा।
भ्रू-भंग अंग-अंगड़ाई ले,
डमरू डिम-डिम बम बोल उठा।।१२।।

अचला चल अचल चलायमान,
दिकपाल निमग्न बिचारों में।
रसिया,अमरीका,मिश्र,अरब
पड़ गये ब्रिटेन बिचारों में।।१३।।

निम्मो जनरल ने प्रकट किया,
आक्रामक मिंया अयूब हुए।
भुट्टो-भय से ऊथान्त वदन,
चिर बन्द हुआ मनहूस हुए।।१४।।

सन् पैंसठ मास दिसम्बर का,
उत्तरार्ध अन्त हिममय दिन था।
स्पष्ट रूप से संयुग का
पाकेश-बदन निर्घोषण था।।१५।।

तब सत्य सत्य ही है आखिर,
विन परचाये यह प्रकट हुई।
आक्रामक से बदला लेने,
भारत की सेना निकट गई।।१६।।

भारत की विपुल-भुसुण्डी से
गोले अंगार उगलते थे।
मनु यवन-तरुण-तरु संगर में,
दावानल अमित निगलते थे।।१७।।

पड़ गई मार विकराल काल,
तब काल कराल भयाथल था ।
भग्गी सी छायी सेना में,
मार्शल मानस भी आकुल था ।।१८।।

सब मित्र राष्ट्र,सीटो, सेन्टो,
स्तम्भित और सशंकित थे ।
वेजां रास्ते से मित्र फँसा,
मन-मन्दिर पूर्ण प्रकम्पित थे ।।१९।।

दर्रा हाजी पीर क्षेत्र को,
किया हस्तगत कर संगर ।
जेट विमानों को तवाह कर,
दिखलाया निज शौर्य भयंकर ।।२०।।

दो धारों में सैन्य सजाकर,
विक्रान्त-बाघ से टूट पड़े ।
छम्ब क्षेत्र को ग्रहण किया,
गोले तोपों से उबल पड़े ।।२१।।

स्याल कोट लौहार दुर्ग को,
भून दिया अंगारों से ।
काडगील लब्ध किया सहज में,
भग्गी सी पड़ी प्रहारों से ।।२२।।

बादल-दल सा घुमड़-घुमड़,
छाया दल मुगल भयावन था ।
छितराने लगा क्षणिक भंगुर सा,
भारत-दल प्रवल प्रभंजन था ।।२३।।

हाय-हाय तोबा-तोबा का,
अल्ला अकबर रव छाया ।
हर-हर बम-बम का महोच्चार,
बदले में संयुग-विच छाया ॥२४॥

रक्तों की सरिता स्रवित हुईं,
कच्छप से मुण्ड भंयकर थे ।
शफरी थीं भुजा भुसुण्डी असि,
मृत रुण्ड मगर भंयकर थे ॥२५॥

काली-कंकाली नृत्य करें,
करते पिशाच तव रूधिर पान ।
आँतों से खेलें काक कंक,
मानो धरणी ने किया दान ॥२६॥

आहव-कटाह इक अश्मक का,
बालू-बारुद का ढेर घना ।
प्रज्ज्वलित वह्नि भुसुण्डी की,
कोयला-गोला का ढेर बना ॥२७॥

सैनिक-दल चना, धान से थे,
चटका देकर वे भुनते थे ।
अथवा रस-रुधिर जवानों का,
अंग-अंग पकवान सुपगते थे ॥२८॥

याह्या विक्रान्त-अचलसम था,
लड़ता रहता था क्षेत्र छम्ब ।
दिल दहल गया कम्पित होकर,
जब पड़ा धमाके साथ बम्ब ॥२९॥

ले लिया छम्ब और उड़ी पुच्छ,
अनवर सरि तवी को किया पार ।
मियां अयूब पराजित थे,
चौधरी चतुर की पड़ी मार ।।३०।।

खिसियाकर भारी गोले को,
अमृतसर नगरी में डाला ।
पर प्राण नहीं बच सकते थे,
सच्चे वीरों से था पाला ।।३१।।

रसिया का रुख तत्क्षण पलटा,
कह दिया—'करो अब युद्ध बन्द ।'
परिषद् से होकर साधिकार,
भारत-आनन को किया बन्द ।।३२।।

भोले शास्त्री को बहकाकर,
बुलवाया उसने ताशकन्द ।
चह्वान, स्वर्णसिंह गये साथ,
लिख दिया पत्र वह मुहर-बन्द ।।३३।।

"वाहिनी-विजित भूमि छोड़े,
भावी सगर को करो बन्द ।
सुख शान्ति लहैं जनता दोनों,
मिट जाय सदा को दुरित-द्वन्द ।।३४।।

जनता से बचन-बद्ध थे वे,
छोड़ेंगे ना हम विजित क्षेत्र ।
अस्ति-नास्ति में लाल पड़े,
कैसे स्वीकारें सन्धि-पत्र ।।३५।।

था कोसीगन का पूरा दबाव,
हस्ताक्षरित था सन्धि-पत्र ।
काली थी निशा जगत काला,
काला-शरीर रह गया अत्र ।।३६।।

जनवरी मास छासठ सन था,
भारत माता का लाल उठा ।
पाते ही दुखद-वृत्त को तब,
भारत-जन-गण बौखला उठा ।।३७।।

झण्डे झुक गये शोक छाया,
उजियाले में था अन्धकार ।
हा ! लाल-बहादुर चला गया,
घर-घर मातम का चीत्कार ।।३८।।

हे काश्मीर ! तेरे कारण,
खोया उस लालबहादुर को ।
शक्ति साहस से दबा दिया,
जिसने अयूब से दादुर को ।।३९।।

भारत की जनता रो उट्ठी,
आँखों से आँसू निकल पड़े ।
हे काश्मीर ! तब रक्षक हित,
बर-वचन-वृन्द यों निकल पड़े ।।४०।।

"हे चित्र केतु-कुल-कलित केतु,
हे शान्ति-प्रचारक ! कर्म-वीर ।
असमय-युग में तजि कहाँ गया,
बतलादे हमको धर्म-धीर ।।४१।।

हे सत्य-अहिंसा-मग - राही,
हे अडिला-वचन के शैल राट्।
तेरी वाणी के सुनने को,
उत्सुक थे जग के राष्ट्र-राट् ।।४२।।

भारत-जननी का तू सपूत,
अथवा नन्दन सा ललित-हार।
तू किस निद्रा में पड़ा हाय,
रे जाग जाग, माँ को निहार ।।४३।।

उठ अरि हन्ता। कर तुमुल घोष,
थर्रा जावे अग-जग दिगन्त।
ना पाक पाक होकर विमुक,
हो सुखी देश का आदि अन्त ।।४४।।

तू बापू-बचनों का पोषक,
भारत का भाग्य विधायक था।
तू पंचशील के निर्माता,
नेहरू का सच्चा पायक था ।।४५।।

चिर निद्रा में निद्रित होकर,
बापू से मिलने चला गया।
अथवा उस दीनवन्धु प्रभुको,
सन्देश सुनाने चला गया ।।४६।।

तू चला गया नेहरू-नभ-पथ,
विश्वास-घात का सहि प्रहार।
रोते हैं बाल-वृद्ध-जन गण,
स्मृति कर तेरा अमित प्यार ।।४७।।

भारतांग-कुशल-रक्षक, नाहर,
रक्षा का मार्ग बतादे अब ।
ललिता-पति लाल बहादुर उठ,
वस्तुतः तत्व बललादे अब ।।४८।।

चिर आशिष दे हो देश एक,
हो व्याप्त शान्ति जग में प्रकाम ।
तू अमर ! अमर करनी तेरी,
तुझको प्रणाम, शत शत प्रणाम ।।४९।।



चतुर्थ-सर्ग

ओ काश्मीर ! तेरा शासन,
पलटा पैंसठ से उभय वार ।
पाकेश अयूव याह्या खाँ को,
उन्नति से होता दुख अपार ॥१॥

भड़काते कभी मुस्लिम-जन को,
इस्लामवाद का दे नारा ।
मिथ्या प्रपञ्च फैलाता था,
वाहित कर गुप्त - चरीधारा ॥२॥

गुजरात-द्वन्द को सम्मुख रख,
दुनियाँ अनृत प्रचार किया ।
मानो मिथ्या-भाषण व्रत को,
कलि-सदृश स्वयं ही धार लिया ॥३॥

तुझको अपने कर गते करने,
नित नये बहाने खोजता था ।
भारत - नन्दन - कानन तू,
किस विधि आवे यह सोचता था ॥४॥

तेरा ही एक हठात् विमान,
पश्चिम की दिशि को मोड़ लिया ।
कर भस्म उसे सम्बन्ध तोड़,
घर बैठे झगड़ा मोल लिया ॥५॥

विन कारण कारण खोज कोई,
अड़ता था अड़ियल टट्टू सा।
बांध फरक्का-जल विवाद,
आ धमका वजर बट्टू सा ॥६॥

अमरीका से ले साहाय्य-युद्ध,
चाऊ से पाकर आश्वासन।
तेरी सीमा पर नित्य नये,
षडयन्त्र रचाता मन-भावन ॥७॥

भारत पर डाला भार प्रवल,
शरणागत जन का दिन-दूना।
उकसाने बंग-प्रजा-जन को,
दोषारोपण करता ऊना ॥८॥

पर काश्मीर ! तू पूछ गंग से,
क्या गुजरा बंगाले में।
तेरे ही जानी दुश्मन ने,
गजव ढहे बंगाले में ॥६॥

बंग-देश से धन लेकर,
पोषित-पश्चिम का पाक हुआ।
बंगाली-जन को श्रमिक बना,
स्वामी पश्चिम का पाक हुआ ॥१०॥

पिस गई बंग-जनता दुःख से,
निर्धनता नंगी नाच उठी।
जूँ रेंगी न शासक-श्रुति पर,
कष्टों से प्रजा कराह उठी ॥११॥

सन् सत्तर मास दिसम्बर में,
हो गये चुनाव बंगाले में।
अपने दल के साथ मुजीवर,
जीत गये बंगाले में ॥१२॥

मांग करी सत्ता को सोंपो,
जनता के तुम हाथों में।
जनता का शासन तुम देदो,
जनता के ही हाथों में ॥१३॥

होते गत यों दिन-महिने,
तब मांग बढ़ी बंगाले में।
टालमटोल करी याह्या ने,
जोश बढ़ा बंगाले में ॥१४॥

दफ्तर में जाना बन्द किया,
प्रिय-प्रजा तन्त्र का नारा था।
शेख मुजीवर की जय हो,
जय बंगला-देश हमारा था ॥१५॥

याह्या ने टिक्का चपरि-भेज,
सेना का तन्त्र सम्हाला था।
जनता की इस गति-विधि पर,
मानों पाला सा डाला था ॥१६॥

भुट्टो से करके कपट-मन्त्र,
निर्घोषण का तब वचन दिया।
अधिकाधिक सोंपू जनता को,
शासन याह्या ने वचन दिया ॥१७॥

सेना को देकर कपट-हुक्म,
पाकेश पधारे थे ढाका।
करनी सद्भाव मयी वार्ता
संग सोह रहे भुट्टो आका ॥१८॥

मन-मोर मुजीवर नाच उठा,
अवलोक हरित-तृण का सपना।
बंगला है पाकस्तानी का,
है पाक पियारा भी अपना ॥१९॥

कर कपट मन्त्र दे अनृत-मोड़,
पाकेश गये रावलपिंडी।
हो गई ध्वनित ढाका नगरी,
तड़िता सी तड़की भूसुण्डी ॥२०॥

यह निशा नहीं साक्षात्-मृत्यु,
ये तारे नहिं अंगारे थे।
होली का हर्ष अमर्ष हुआ,
तोपों के रव नक्कारे थे ॥२१॥

मार्शल-ला का हुक्म हुआ,
सम्पूर्ण पूर्व बंगाले में।
जय बंगला देश, मुजीबर जय,
यह गूँज गया बंगाले में ॥२२॥

वह बंग-बन्धु, वह बंग-सिंह,
अपने घर में था नज़र बन्द।
जनता ने,-'शासन को सोंपों-
की मांग ध्वनि को कर बुलन्द ॥२३॥

नृशंस लूटा खसोट हुई,
लूट सतीत्व तब अवला का ।
बच्चों को लूटा जननी से,
सिंदूर-भाल से महिला का ।।२४।।

धन-धान्य लुटा बाजारों में,
सुख-शान्ति लुटी थी ग्रामों से ।
कुसुमों की कलिता कोमलता,
लुट गई सफल आरामों से ।।२५।।

घर-घर से लुटी गई शान्ति,
निर्भयता बच्चों से लूटी ।
वृद्धों से अनुभव लूटलिया,
आ-बैल - मार विपदा - टूटी ।।२६।।

कन्या का शील-भंग होता,
यह देख पिता क्रोधित होता ।
परवश था दुष्ट पठानों से,
बेचारा सिर धुन-कर रोता ।।२७।।

मासूम पशु सा कत्ल किया,
बंगाली दल तब महिला का ।
हर-वीथि-सड़क चौराहों पर,
अबला सा दल था महिला का ।।२८।।

मन्दिर, मसजिद सब बन्द हुए,
विद्यालय भी सब हुए बन्द ।
निर्दोष, निरीह गुरु-शिष-का,
आना जाना कर दिया बन्द ।।२९।।

बन्दूक-अनी को दिखलाकर,
लाते जनता को घर-बाहर ।
फिर खूनी उन्हीं भुसुण्डी से,
भूने जाते रहिला से नर ॥३०॥

जो जान बचा कर भाग खड़ा,
उसका भी वे पीछा करते ।
भय-भीत मूसकों का जैसे,
मार्जार, श्वान पीछा करते ॥३१॥

निर्बाध-निरीह-निर्दोष-बाल,
दुध-मुहे पटक भू पर देते ।
मानो कलि-युग के विविध-कंस,
माँ से हठात शिशु को लेते ॥३२॥

हर-गेह-गेह, हर-ग्राम-ग्राम,
नगरों के नगर तवाह किये ।
खूनों की नदियाँ उमड़ चलीं,
शवमय सब चौराह हुए ॥३३॥

बंगाल-लौह-मय था कटाह,
गोली-गोलों का ईंधन था ।
थी आग कराल शतघ्नी की,
भट्टी तोपों का तन था ॥३४॥

शोणित-सर्पी सा उबल रहा,
भुज, भुण्ड, कंध सब पगते थे ।
दर्वी भालों की अनी-बनी,
कान्दविक अनी-जन तलते थे ॥३५॥

हाटक-घी सब पिघल-पड़ा,
यों हाट-बाट चौराहे पर ।
बूंदी से मुण्ड लुड़कते थे,
तलते जिमि नगर-कटाहों पर ॥३६॥

कहुँ झाड़ी-झाड़ी झंकाड़-पार्श्व,
कर-मुण्ड-झुण्ड, कंकाल-जाल ।
गेहों के अन्दर बैठि-बैठि,
खाते रहते जम्बुक-शृङ्गाल ॥३७॥

अत्याचारों से भाग-भाग,
जन-जूह चला अब भारत में ।
अशरण-जन को शरण मिली,
तब राम-कृष्ण के भारत में ॥३८॥

तब मुक्ति-वाहिनी अनी-बनी,
जय बंगला-देश का नारा था ।
कहते 'ओमार सुनार बंगला',
जय बंग-बन्धु का था नारा ॥३९॥

बंगाली क्षुधित भेड़िये से,
अब भूल गये अपना आपा ।
करने स्वतन्त्र निज बंगला को,
छिप-छिप कर करते थे छापा ॥४०॥

पंचम सर्ग

ओ काश्मीर काले बादल,
तेरे अम्बर पर उठने लगे।
ना जाने कब वे बरस पड़े,
रह-रह कर झगड़े घुलने लगे ॥१॥

तुझसे रण करने की धमकी,
देता, करता जग चीख-पुकार।
अमरीका सहित देश मुस्लिम;
करते रहते मिथ्या प्रचार ॥२॥

भारत देवी तव रक्षक,
थी चुस्त चतुर नित सावधान।
बुलवाती नित्य नये अतिथि,
करने विवाद का समाधान ॥३॥

रसिया-जर्मन इगलैंड-देश,
अमरीका - पावन-प्रजा - जह।
समझा था रैंड क्रौस का दल,
याहया का जालिम-चक्रव्यूह ॥४॥

वस्तु स्थिति स्वयं ही प्रकट हुई,
निष्पक्ष परीक्षक के आगे।
मिथ्या-प्रचार याहया-खाँ के,
भग्न हुय जैसे धागे ॥५॥

बास्तविकता समझी रसिया ने,
खुल गये पाक के कपट पत्र।
साहाय्य-समर हो उभय-मध्य,
लिख दिया अमिट-सा सन्धिपत्र ॥६॥

भारत रसिया की सन्धि हुई,
मानव ने समझी मानवता।
समझे सुहृद ने समझी थी,
अपने सुहृद की परवशता ॥७॥

खाई-सुरंग निर्माण हुईं,
तोपों के मोके अटल बने।
चौकीं थीं पाक-वाहिनी की,
संगर के शिविर-वितान तने ॥८॥

तब भी तू सोया रहा सिंह,
निज-माँद-मध्य लखकर शृङ्गाल।
अथवा प्रमुदित था वीर जात!
जैसे कर गत लखि ग्रास व्याल ॥९॥

पर हुईं सशंकित इन्दिरा जी,
बुलबाये सत्वर दल नेता।
नितरां-विजय उपलब्धि-हित,
मन्त्रणा हुई "हों हम जेता' ॥१०॥

भारत-रक्षा का भार सौंप,
यात्रा विदेश का कियाऽरम्भ।
शुभ अन्त उसी का होता है,
जिसका होता है शुभारम्भ ॥११॥

देने वस्तु का तत्व ज्ञान,
करने भारत का रुख प्रकाश।
सौहार्द्र भाव को जागृत कर,
करने शत्रु का पटल-फाश ।।१२।।

जर्मनी, फ्रान्स इगलेण्ड-देश,
पहुँची नेहरूजा अमरीका।
समझाया सबको न्याय-पक्ष,
पाक-प्रभाव किया फीका ।।१३।।

सच्चे मानव ने मानवता,
न्यायी ने समझा न्याय पंथ।
विचलित होते नहिं विघ्नों,
बदजाते पग नर के सुपंथ ।।१४।।

ओ काश्मीर! कल थी तुझसे,
इन्दिरा का पाकर वरद हस्त।
रक्षा के साज सजे सबकी,
सैनिक-मैगल थे मदोन्मत्त ।।१५।।

चप्पा-चप्पा का अवलोकन,
करते थे पुङ्गव वीर "लाल"।
सुनि 'मानिकशा' गम्भीर-गिरा,
होजाते सैनिक जन निहाल ।।१६।।

नेहरू-कुल-कलित-कमिलिनी सी,
फैलाती अपनी मदिर-गन्ध।
थे मुग्ध सभी जन-मन-मन्दिर,
श्रद्धा-सूत्रों के नवल-बन्ध ।।१७।।

अथवा रक्षित उससे लख-कर,
बढ़ गया मनोबल नवोत्साह।
अथवा तड़िता की तड़कन से,
भासित भारत के वारिवाह ॥१८॥

तू काश्मीर! सोया जागा,
स्वप्निल तन्द्रा में था विभोर।
क्रीडागत कलित कंजिनी से,
करता पतंग ले रश्मि-डोर ॥१९॥

जाता था लेता भद्र-विदा,
छिपता था हँसता था जाता।
पीछे को मुड़ि-मुड़ि लखता था,
प्यारी मुख को जाना-जाता ॥२०॥

थे राष्ट्रपति दिल्ली-नगरी।
नेहरूजा पहुँची कलकत्ता।
भारत-ललाट! तद्रामय तू,
सैनिक सतर्क थे अलबत्ता ॥२१॥

खग-कुल नीड़ो को लौट रहे,
निलयों को श्रमिक बुद्धिजीवी।
कानन से द्विशफ-चतुष्पद थे,
दफ्तर से लौटे अनुजीवी ॥२२॥

मनचले सनेही 'पिक्चर' में,
हाटों में विचरें नरनारी।
रसवती मध्य गृह-स्वामिनि थीं,
पश्चिम दिशि पहुँचे तमसारी ॥२३॥

मुमताज-ताज, गोविन्द सिंह जी,
जसवंत सिंह, रणजीत वीर।
हरिसिंह, बहादुर शाह चले,
खेलन जननी-भू हो अधीर ॥२४॥

हरि ऋषिग्रह विधु ईसा सन् का,
तीन दिसम्बर था पुनीत।
पाकेश-भेड़िये पिंगल ने,
भारत पर ठानी तब अनीत ॥२५॥

आगरा, छम्ब अमृतसर में,
बरसाये दुश्मन ने गोले।
जम्बु जसवन्त, बहादुर की,
नगरी में छाये थे गोले ॥२६॥

छाया-पति सत्वर भाग गये,
स्तब्ध हुआ सैनिक प्रदेश।
मारो उस दुष्ट भेड़िये को,
बौखुला भारत - अशेष ॥२७॥

मूँछों पर पहुँचे वीर हस्त,
संगीन शतघ्नी के चालक।
भूखे बाघों से गरज पड़े,
भू-जल-वायु अग्नि-पालक ॥२८॥

जा छिपे शिशु जननी-उर में,
गेहों में पहुँचे नर-नारी।
इन्दिरा-के-वचन श्रवन करने,
आकुल-व्याकुल जनता सारी ॥२९॥

विद्युत-प्रकाश सब लुप्त हुआ,
नगरों में छाया अन्धकार।
मानो निमग्न करने भू को,
उमड़ा तम का सिन्धु अपार ।।३०।।

टिम-टिम करते थे लघु-दीपक,
धुँधली प्रकाश की रेखा ले।
मानो खद्योत् छिपे हैं आ,
कोने-कोने में भय को ले ।।३१।।

रेडिओ खुले घर-कक्ष-कक्ष,
'स्थानक' सब थे शान्त मौन।
आज्ञा बिन संजय जननी के,
कह सकता कुछ भी वीर कौन ।।३२।।

कलकत्ता से आई दिल्ली को,
साहसिन-सहज प्रधान-मन्त्री।
'वाराह गिरि' के ढिंग पहुँची,
स्पन्दित थी हृद् की तन्त्री ।।३३।।

सेना नायक दल के नेता,
दृढ़ वीर 'अटल' से कर विचार।
जनता का लेकर आश्वासन,
उत्तर-रण हित निरधार वार ।।३४।।

आपात् काल का निर्घोषण,
दृढ़ स्वर में किया था 'वाराह'।
मध्य-निशा में इन्दिरा का,
सन्देश-प्रसारण का प्रवाह ।।३५।।

फिर क्या था भारत का दल-बल,
दल बादल सा रण-उमड़ चला ।
चहुँ दिशि से प्रलय-सिन्धु उमड़ा,
या पावस-घन-गन घुमड़ चला ।।३६।।

भारत-माता के शत्रु को,
क्षण में कर देंगे नष्ट-भ्रष्ट ।
हम तन-मन-धन न्यौछावर कर,
माँ की काटेंगे विपत-कष्ट ।।३७।।

हम डरें न गोली-गोलों से,
झंझा - हिम-के तूफानों से ।
बढ़ते ही जायेंगे संगर में,
भिड़ने को शत्रु जवानों से ।।३८।।

हम-पाक सैन्य को मूली सा,
काटेंगे रण में बढ़-बढ़ कर ।
टेंकों को सैवर यानों को,
तोड़ेगें नेटों पर चढ़ कर ।।३९।।

काश्मीर कष्ट का भंजन कर,
कल-देंगे भारत - जननी को ।
हम भारत के सच्चे सपूत,
दिखला देंगे निज जननी को ।।४०।।

जय-भारत जय-जय इन्द्रिरा की,
जय गान्धी लाल बहादुर की ।
जय राष्ट्र-पति जय हिन्द कहो,
जय नेहरू लाल जवाहर की ।।४१।।

हम उस अग्नि के पुतले हैं,
जो भस्म पाक को कर देवें।
छाती पर चढ़ कर रक्त पिये,
दुश्मन का दम दम में लेवें ।।४२।।

हे काश्मीर ! जय ध्वनि के संग,
मतवाले बढ़ते जाते थे।
गम्भीर गिरा में विजय-गीत,
रह-रह कर गाते जाते थे ।।४३।।

करते थे मार तीव्र सर सी,
विद्युत से नैट गगन में चढ़।
आने से पहले जा भिड़ते,
भूखे बाघों से आगे बढ़ ।।४४।।

हे काश्मीर जब संयुग में,
सेवर-विमान नभ में छाते।
तो यान विध्वंसक तोपों से,
मुड़-मुड़ जाते गिरि जल जाते ।।४५।।

श्रीनगर जम्बु गिरि-माला में,
अग्नि की वर्षा धूँआ-धार।
पर प्रजा मनो-बल स्थिर था,
साहस भी उनमें था अपार ।।४६।।

हे काश्मीर ! हे कर्ण देश !
पाकेश-पधारे क्षेत्र छम्ब।
तेरी छाती को छलने को,
बरसाये तुझ पर विविध बम्ब ।।४७।।

पाकेश-मित्र सब कहते थे,
अपराधी हैं भारत वासी।
'परिषद' में युद्ध विसर्जन का,
प्रस्ताव रखा निक्सन-शासी ॥४८॥

बीटो से रसिया ने उनका,
प्रस्ताव पूर्ण का दिया रद्द।
भुट्टो ने पत्रों को फाड़ा,
यों प्रकट किया निजभाव क्रुद्ध ॥४९॥

हे हरीसिंह के सिंह वीर,
याह्या था क्रोधित भारत पर।
'परिषद' का दबा कोप प्रकटा,
यों गजब ढहा कर भारत पर ॥५०॥

पर वीर महा इंजीनियर था,
साधे पश्चिम-रण की कमान।
आदेश पायलेटों को था,
शत्रु से रहना सावधान ॥५१॥

गम्भीर गिरा में मार्शल यह,
बोला-वीरो ! हो लो तैयार।
कर ध्वंस पवन-पट्टी को तुम,
नाकाम करो अरि एक वार ॥५२॥

ऋण आज चुकाना है तुमको,
भावी पीढ़ी का शूर वीर।
हो जाय नष्ट वह दुष्ट सद्म,
जिससे चिन्तित है काश्मीर ॥५३॥

भारत पर करके वार-वार,
निज वार बनाता है अशान्त ।
कर दो तुम उसका अन्त आज,
पड़ जाय मृतक सम वह प्रशान्त ।।५४।।

सुनकर उसकी गम्भीर-गिरा,
वीरों में उमड़ा अति साहस ।
नेत्रों में क्रोध उभर आया,
थी रुधिर मयी उनकी नस-नस ।।५५।।

वे भरने लगे उड़ाने अब,
शत्रु की थल सेना में जा ।
तब सेवर और मिराजों पर,
हण्टर सेप्टर से आगे जा ।।५६।।

शत्रु के वंकर, टेंकों पर,
तोपों पर वम-वरसाने लगे ।
वे माल-भरे मोटर, ट्रक को,
रेलों को स-पुल उड़ाने लगे ।।५७।।

शृङ्खला तोड़ दी रेलों की,
कर दिया रडारों का भेदन ।
तेलालय लपटों में वदले,
पेटन[1] टैंकों का विच्छेदन ।।५८।।

सर गोधा, शेरकोट, मेंहर,
चन्देर, सकेसर, मिया वाल ।
मुलतान, कंराची, पेशावर,
वम-मय आहत से थे रिसाल ।।५९।।

---

१ पाक टेंक का नाम ।

वे करते कभी 'डाग-फाइट'[२],
ले गुप्त-केमरा की सहाय।
राकेट कैनसन[३] के द्वारा,
वरसाते वम-अनु-काल पाय ॥६०॥
रात्रि के गहन-तोम-तम में,
मारुत सा "मारुत"[४] उड़ता था।
पवि सदृश घात-संघातों से,
दुश्मन के दल को दलाता था ॥६१॥
भयभीत हुई शत्रु सेना,
नैटों[५] की खाकर प्रवल मार।
मिग[६]-नैट तभी पीछा करते,
भग जाते शत्रु हार-हार ॥६२॥
वीरो लड़ो, हटो न। रण से,
करो शत्रु की नींद हराम।
गरज-गरज कर बोल रहे थे,
मन्त्री श्री जगजीवन राम ॥६३॥
वढ़ता था साहस वीरों का,
शत्रु होसले होते पस्त।
इन्दिरा के संकेत हेरि कर,
पाक क्षेत्र करते गत हस्त ॥६४॥
किन्तु नेहरू की वीर सुता,
वाघिन सी क्षण-क्षण तड़क रही।
मानिक शा, इला-नाथ[७] वाणी,
विजली पवि सी तब कड़क रही ॥६५॥

---

२. विमानों के लड़ने की एक विधि ३. लड़ाकू बम-वर्षक विमान का एक अस्त्र ४. बम-वर्षक विमान एच. एफ. २४. ५. नेट भारत का विमान ६. रूस का विमान भारत प्रदत्त ७. एअर मार्शल पी. सी. लाल

घुस गये इधर वे बंग-मध्य ,
जय हिन्द सभी की बानी थी ।
जय बोलो भारत-माता की !
शरणागत-आन-निभानी थी ॥६७॥

पद्मा गंग ब्रह्म पुत्र को,
पार किया बलवानों ने ।
रातों रात उतार दिया दल,
तीर-तीर पर यानों ने ॥६८॥

गाजी बेड़ा भग्न किया,
नौका स्टीमर डुबा दिये ।
चटगांव फ़तह किया चट-पट,
तोपों के मुख को झुका दिये ॥६९॥

जैसोर को मिल्ला मुनिघाट,
कर लिये हस्तगत तत्क्षण में ।
उस वीर अरोड़ा की वाणी,
साहस वर्धक थी उस रण में ॥७०॥

सैवर जैट विध्वंस किये,
सब बर्बरता को दवा दिया ।
भिड़ गये जान पर खेल वीर,
शत्रु का साहस हवा किया ॥७१॥

वायु मार्ग पर कब्जा कर,
पूरव पश्चिम को छिन्न किया ।
ढाका पर घेरा डाल पुष्ट,
बेतार-तार को भिन्न किया ॥७२॥

'हथियार डाल दो मियाजी अब',
यह मानिक-शा की थी वानी।
कर दिया पूर्ण अपने प्रण को,
रण-पूर्व-देश ने थी ठानी ॥७३॥

नियाजी ने आत्म समर्पण कर,
भारत की जय स्वीकारी थी।
जय बंगला देश, इन्दिरा जय,
तब जनता बंग पुकारी थी ॥७४॥

रह गया देखता अमरीका,
याहृया की पूर्ण पराजय थी।
थी मुक्ति-वाहिनी-हर्षलीन,
भरत की जय, सत की जय थी ॥७५॥

परिषद में चीखा-वार-बार,
सप्तम-बेड़ा को भेज दिया।
आर्थिक-सहयोग-वियोग किया,
रण-करने पाक सहेज किया ॥७६॥

रह गये पाक-के मित्र-संघ,
सब मिली धूल में चालाकी।
भारत का मित्र-प्रभंजन सा,
दल ने अरि-धन एका की ॥७६॥

शरणागत बंग स्वतन्त्र हुआ,
कर दिया हिन्द ने युद्ध बन्द।
हे कश्मीर ! तू शत्रु से,
हो गया उसी क्षण ही स्वच्छद ॥७८॥

तेरे संकट की निशा- गई,
सुख-पूर्ण प्रभात धरणि छाया।
मुंह की खाकर वह लौट गया,
जो बार-बार सम्मुख आया॥७६॥

ईश्वर से यही कामना है,
हो जाय अखण्ड तू काश्मीर।
तू भारत-माँ का है ललाट।
युग-युग सुख भोगें देश वीर॥८०॥

